International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
January - 2018, Volume-5, Issue-1 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम का आधारभूत सिद्धान्त

डॉ0 मनोरमा राय,
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
धर्मेन्द्र सिंह मैमोरियल कॉलिज, अटौला, मेरठ

सार
गाँधी जी की शिक्षा योजना को बेसिक शिक्षा की संज्ञा दी जाती है। इस शिक्षा का पाठ्यक्रम क्रिया–प्रधान है तथा इसका उद्देश्य बालक को कार्य, प्रयोग एवं खोज द्वारा उसकी शारीरिक, मानसिक और आत्यात्मिक शक्तियों का विकास करना है जिससे वह आत्मनिर्भर रहते हुए समाज का उपयोगी अंग बन जाये। गाँधी जी ने अपने क्रिया–प्रधान पाठ्यक्रम में मातृभाषा बेसिक क्राफ्ट, गणित, समाजशास्त्र, सामान्य विज्ञान, कला तथा संगीत आदि विषयों के प्रमुख स्थांन दिया। उन्होंने बताया कि पहली कक्षा से लेकर पॉचवी कक्षा तक के सभी बालक कविताओं के लिए एक सा पाठ्यक्रम होना चाहिए। इसके पश्चात् बालकों को बेसिक क्राफ्ट की तथा बालिकाओं को गृह–विज्ञान की शिक्षा मिलनी परम आवश्यक है। ध्यान देने की बात है कि गाँधी जी की शिक्षा योजना प्राथमिक एवं लघु माध्यमिक कक्षा स्तर तक ही सीमित है। इस दृष्टि से उनके द्वारा संगठित किया हुआ पाठ्यक्रम भी केवल इसी स्तर तक के लिए है।

प्रस्तावना
गाँधी जी के द्वारा निर्धारित शिक्षा के प्रकार को निरूपित करने से पूर्व उनके द्वारा शिक्षा के सम्प्रत्यय को समझ लेना परमावश्यक है। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास के रूप में स्वीकार की जा सकती है उनकी दृष्टि में साक्षरता शिक्षा नहीं है, यह तो न शिक्षा का प्रारम्भ है ओर न अन्त। यह तो स्त्री–पुरुषों को शिक्षित करने का साधन है। शिक्षा को परिभाषित करते हुए गाँधी जी ने स्वयं लिखा है– शिक्षा से मेरा तात्पर्य है– ''बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुमुखी विकास।''

1. जन–शिक्षा – गाँधी जी के समय भारत में लगभग 13 प्रतिशत लोग साक्षर थे। विद्यालयी शिक्षा के अभाव में उनमें न आत्मविश्वास था ओर न जागररूकता थी। तब हम प्रगति कैसे करते। गाँधी जी ने अशिक्षा के अभिशाप से बचने के लिए जन शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा और स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। जन–शिक्षा दो रूपों में होगी– एक तो बालकों को शिक्षित करने के लिए इन्होंने बेसिक शिक्षा योजना प्रस्तुत की। यह शिक्षा की राष्ट्रीय योजना थी जिसमें 7 से 14 वर्ष के बालकों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा पर बल दिया गया था। इस शिक्षा को गाँधी जी ने हस्त कौशलों पर केन्द्रित किया, एक तो इसलिए कि हस्त–कौशल हमारे जीवन के आधारभूत कार्य हैं और दूसरे इसलिए कि इनके द्वारा विद्यालयों का खर्च निकल सकता है और यह शिक्षा सबके लिए सुलभ हो सकती है। जन शिक्षा के प्रसार के लिए गाँधी का दूसरा कदम था प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था। इनके विचार से अशिक्षित प्रौढ़ों की शिक्षा का उत्तरदायित्व समाज का है। इन्होंने सामाजिक नेताओं, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों का, इसके लिए आह्वाहन किया। गाँधी जी केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे इसलिए उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा की पाठ्यचर्या में साक्षरता के साथ–साथ सफाई, स्वास्थ्य रक्षा, बौद्धिक विकास, नैतिक विकास, उद्योग, व्यवसाय, समाज कल्याण और संस्कृति से सम्बन्धित कार्यों को रखा था।

2. स्त्री शिक्षा – गाँधी जी स्त्री को ईश्वर की श्रेष्ठतम रचना मानते थे। गाँधी जी ने इस बात को स्पष्ट किया कि यद्यपि पुरुष और स्त्री का कार्य क्षेत्र थोड़ा भिन्न होता है लेकिन उनकी सांस्कृतिक आवश्यकताएं समान होती हैं। इसलिए दोनों को अपने–अपने विकास के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। इन्होंने स्पष्ट किया कि मुख्य रूप से स्त्री को पत्नी, माता व समाज के निर्माता के रूप में कार्य करना होता है। पहले दो कार्यों में वह पुरूष से भिन्न अवश्य होती है पर अपने तीसरे उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिए उसे अपनी सभ्यता व संस्कृति का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। परन्तु किसी की स्थिति में स्त्रियों को संगीत व नृत्य से दूर रखना चाहते थे। इनका मत था कि ये क्रियाएं वासना को बढ़ावा देती है, ये स्त्री व पुरुष की शिक्षा में केवल इतना ही अन्तर करते थे कि स्त्रियों को गृह कार्य की अतिरिक्त शिक्षा दी जाये। स्त्री पुरुष को समाज में बराबर का स्थान देकर उनकी शिक्षा की व्यवस्था कर गाँधी जी ने समाज का बड़ा उपकार किया है।

3. सह–शिक्षा – गाँधी जी ने लड़के–लड़कियों को एक साथ रखकर पढ़ाने के प्रयोग किये थे ओर उनके आधार पर सह–शिक्षा की सम्भावना स्वीकार की थी। गाँधी जी के अनुसार प्राइमरी व उच्च स्तर पर सह–शिक्षा की व्यवस्था की जा

सकती है परन्तु किशोरावस्था पर यह उचित नहीं होती। अपने इस मत को व्यक्त करते समय ये प्रत्येक समाज को यहां छूट देते हैं कि वह अपने पर्यावरण को दृष्टि में रखते हुए सहशिक्षा को स्वीकार व अस्वीकार करने के लिए स्वतंत्र हो। इस प्रकार गाँधी सहशिक्षा के सम्बन्ध में सामाजिक पर्यावरण पर निर्भर करते थे।

4. व्यावसायिक शिक्षा – गाँधी जी पुस्तक प्रधान सैद्धान्तिक शिक्षा के विरोधी थे। इन्होंने क्रिया प्रधान शिक्षा पर बल दिया ऐसी शिक्षा पर जो मनुष्य को कर्म के सभी क्षेत्रों में कुशलता के साथ कार्य करने की क्षमता प्रदान करे। ये मनुष्य की मूल आवश्यकताओं– रोटी, कपड़ा और मकान के प्रति भी सचेत थे। ''इसलिए इन्होंने अपनी बेसिक शिक्षा में हस्त कौशलों की शिक्षा को स्थान दिया। इन्होंने स्पष्ट किया कि भारत कृषि और कुटीर उद्योगधन्धों का देश है इसलिए यहाँ बच्चों को कृषि, बागवानी और हस्त कौशलों की शिक्षा दी जानी चाहिए। ये चाहते थे कि बेसिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद बच्चे आत्मनिर्भर हों तथा अपनी रोजी, रोटी स्वयं कमा सकें।'' और जो बच्चे बड़े उद्योगों और व्यवसायों की शिक्षा लेना चाहें उनके लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। गाँधी जी के अनुसार इस शिक्षा की व्यवस्था औद्योगिक और व्यवसायिक केन्द्रों पर होनी चाहिए। इस हेतु गाँधी जी ने वैज्ञानिक एवं तकनीकि शिक्षा का समर्थन किया है।

5. धर्म–शिक्षा – गाँधी जी धार्मिक विचारधारा के व्यक्ति थे, प्रार्थना, भजन व गीतापाठ इनके दैनिक क्रियाओं के अंग थे। परन्तु विद्यालयों में किसी धर्म विशेष की शिक्षा देने के ये पक्ष में नहीं थे। उन्हें इस बात का भय था कि विभिन्न धर्मों के इस देश भारत में धार्मिक शिक्षा देने से साम्प्रदायिकता और बढ़ सकती है। अतः इन्होंने सभी धर्मों के सामान्य सिद्धान्तों और नैतिक शिक्षा को ही पाठ्यचर्या में स्थान दिया है। ये सत्य को ईश्वर मानते थे। इस सत्य की प्राप्ति के जिए इन्होंने अहिंसा और ब्रह्मचर्य की शिक्षा पर सबसे अधिक बल दिया है। इसके साथ ही साथ इन्होंने प्रेम की उपयोगिता को भी स्वीकार किया है। मानव सेवा को ये सबसे बड़ा धर्म मानते थे। इनके विचार से बच्चों को मानव सेवा की ओर प्रवृत्त करना ही वास्तविक धर्म शिक्षा है।

6. राष्ट्रीय शिक्षा – अंग्रजों ने हमारे लिए जिस शिक्षा का विधान किया था उसके दो ही उद्देश्य थे– पहला शासन कार्य में सहयोग करने हेतु अंग्रेजी पढ़े–लिखे बाबू तैयार करना और दूसरा ऐसे व्यक्तियों का निर्माण जो तन से भारतीय पर मन से अंग्रेज–परस्त हों। इसकी पाठ्यचर्या भी बड़ी दोषयुक्त थी इसका भारतीय जन–जीवन व संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं था। पाठ्यविषयों में सबसे अधिक बल अंग्रेजी भाषा साहित्य को दिया जाता था और अंग्रेजी भाषा ही उस समय शिक्षा का माध्यम थी और यह शिक्षा भी कुछ बड़े नगरों में ही सुलभ थी। इसके अतिरिक्त यह व्यय साक्ष्य भी थी। परिणामतः उच्च वर्ग के लोग ही इसे प्राप्त कर सकते थे और दुख की बात तो यह है कि इस शिक्षा को प्राप्त करने के बाद लोग अशिक्षित लोगों का शोषण करते थे।

स्वतंत्रता की लड़ाई के साथ–साथ गाँधी जी ने तात्कालीन शिक्षा के सुधार के लिए भी कार्य किया। सर्वप्रथम इन्होंने 1921 में अपने साथियों के सामने राष्ट्रीय शिक्षा का प्रस्ताव रखा। 1937 में भारत के सभी प्रान्तों में स्व–सरकारों का गठन हुआ और 11 में से 7 प्रान्तों में कांग्रेस मन्त्रिमण्डल बने। अक्टूबर 1937 में वर्धा में राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें गाँधी जी ने राष्ट्रीय शिक्षा की रूपरेखा प्रस्तुत की जिसे बेसिक शिक्षा कहते हैं। जिसका वर्णन इस प्रकार है–

बेसिक शिक्षा की रूपरेखा

प्रारम्भ में ''बेसिक शिक्षा'' निम्नलिखित रूप में स्वीकार की गई थी–

- 7 से 14 वर्ष वर्ग के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की जाये।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
- सम्पूर्ण शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प अथवा उद्योग पर आधारित हो।
- शिल्प का चुनाव बच्चों की योग्यता एवं क्षेत्रीय आवश्यकताओं के आधार पर किया जाय।
- बच्चों द्वारा निर्मित वस्तुओं का उपयोग हो और उनसे अधिक लाभ किया जाये, स्कूलों का व्यय पूरा किया जाये।
- शिल्पों की शिक्षा इस प्रकार दी जाये कि उससे बच्चों की जीविकोपार्जन हो सके।
- शिल्पों की शिक्षा में आर्थिक महत्व के साथ–साथ उसके सामाजिक एवं वैज्ञानिक महत्व को स्थान दिया जाये।

बेसिक शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त

बेसिक शिक्षा निम्नलिखित आधारभूत सिद्धान्तों पर विकसित की गई थी–

1. शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क बनाने का सिद्धान्त– गाँधी जी शिक्षा को मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि ''किसी भी बच्चे को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखना उसके अधिकार का हनन है यह कार्य असत्य है और मानवीय कसौटी पर हिंसा है।'' उन्होंने सर्वप्रथम इस बात पर ही बल दिया कि राज्य में 7 से 14 वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।

2. शिक्षा को आत्म–निर्भर बनाने का सिद्धान्त– गाँधी जी के सामने सार्वभौमिक, अनिवार्य ओर निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा का प्रश्न था और उस समय राज्य के पास इसकी व्यवस्था करने के साधन नहीं थे। अतः उन्होंने स्कूलों में हस्तशिल्पों की शिक्षा अनिवार्य करने पर बल दिया उनका अनुमान था कि बच्चों द्वारा उत्पादित वस्तुओं से स्कूलों का व्यय निकल सकेगा।

3. सत्य, अहिंसा और सर्वोदय का सिद्धान्त– गाँधी जी सत्य व अहिंसा के पुजारी थे। वे समाज में होने वाले किसी भी प्रकार के शोषण को हिंसा मानते थे और उस समय अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति सामान्य व्यक्तियों का शोषण कर रहे थे। तभी गाँधी जी ने सबके लिए सामान्य शिक्षा के सिद्धान्त को स्वीकार किया, इसमें छोटे–बड़े का भेद नहीं होगा, कोई किसी का शोषण नहीं करेगा सबको अपने उत्थान के समान अवसर प्राप्त होंगे।

4. शिक्षा को जीवन से जोड़ने का सिद्धान्त– उस समय अंग्रेजी शिक्षा का भारतीयों के वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं था। ''गाँधी जी ने शिक्षा को बच्चों के वास्तविक जीवन, उनके प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण, और घरेलू एवं क्षेत्रीय उद्योग–धन्धों पर आधारित कर उसे उनके वास्तविक जीवन से जोड़ने पर बल दिया।''

5. ज्ञान को एक इकाई के रूप में विकसित करने का सिद्धान्त– यदि भौतिक दृष्टि से देखें तो शिक्षा का एक ही लक्ष्य होता है– मनुष्य को वास्तविक जीवन के लिए तैयार करना तब पाठ्यचर्या के समस्त विषयों एवं क्रियाओं का सम्बन्ध मनुष्य के वास्तविक जीवन से होना चाहिए। इस दृष्टि से गाँधी जी ने ज्ञान को पूण इकाई के रूप में विकसित करने पर बल दिया था। उनके इसी विचार ने शिक्षण की सहसम्बन्ध विधि को जन्म दिया। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी ज्ञान पूर्ण इकाई होता है उसे पूर्ण इकाई के रूप में ही स्वीकार करना चाहिए।

बेसिक शिक्षा के उद्देश्य

बेसिक शिक्षा का अर्थ है– बच्चों को आधारभूत ज्ञान एवं कौशल प्रदान करना, उन्हें सामान्य जीवन के लिए तैयार करना। इस हेतु बेसिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निश्चित किये गये–

1. शारीरिक एवं मानसिक विकास– गाँधी जी इस तथ्य से अवगत थे कि मनुष्य एक मनोशारीरिक प्राणी है इसलिए उन्होंने सर्वप्रथम शारीरिक एवं मानसिक विकास पर बल दिया और तद्नुकूल शिक्षा की पाठ्यचर्या का निर्माण करने पर बल दिया।

2. सर्वोदय समाज की स्थापना– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः शिक्षा द्वारा मनुष्य का सामाजिक विकास होना चाहिए। पर गाँधी जी का सामाजिक विकास का एक विशिष्ट अर्थ था। ''वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें कोई किसी का शोषण नहीं करेगा, सब एक–दूसरे से प्रेम करेंगे, सहयोग करेंगे, दूसरे की उन्नति में सहायक बनेगें, सबका उदय होगा।''

3. सांस्कृतिक विकास– उस काल में उच्च वर्ग के भारतीय पाश्चात्य संस्कृति के प्रशंसक होते जा रहे थे तथा गांधी जी ने बड़े बलपूर्वक लिखा था कि ''यदि किसी स्थिति में पहुँचकर कोई पीढ़ी अपने पूर्वजों के प्रयासों से पूर्णतया अनभिज्ञ हो जाती है या उसे अपनी संस्कृति पर लज्जा आने लगती है तो वह नष्ट हो जाती है।'' इसलिए उन्होंने भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए बेसिक शिक्षा का विधान किया था।

4. दार्शनिक एवं नैतिक विकास– गाँधी जी चरित्र बल के महत्व को जानते थे उनके साथियों ने भी शिक्षा द्वारा बच्चों के चरित्र निर्माण पर बल दिया। यह बेसिक शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है।

5. व्यावसायिक विकास– गाँधी जी ने इस सम्बन्ध में दो बात कहीं– पहली यह कि बच्चों को जो भी हस्त कौशल सिखाये जायें उनसे स्कूलों में इतना उत्पादन हो कि उसके विक्रय लाभ से स्कूलों का व्यय निकाला जा सके, और दूसरी यह कि इन हस्तकौशलों और उद्योगों को सीखने के बाद बच्चे अपनी जीविका कमा सकें। गाँधी जी ने आर्थिक अभाव से मुक्ति पाने के लिए इसे सबसे अधिक महत्व दिया। उनके सभी साथी उनके तर्क से सहमत थे।

6. आध्यात्मिक विकास– गाँधी जी के अपने शब्दों में– ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण और सर्वोत्कृष्ट विकास से है,'' तब स्पष्ट है कि गांधी जी शिक्षा द्वारा मनुष्य का आध्यात्मिक विकास भी करना चाहते थे। पर इसके लिए वे किसी धर्म की शिक्षा देने के पक्ष में नहीं थे। वे सर्वधर्म सम्भाव द्वारा इसकी प्राप्ति पर बल देते थे।

बेसिक शिक्षा की शिक्षण विधियाँ

बेसिक शिक्षा में परम्परागत कथन व पुस्तक प्रणाली के स्थान पर क्रिया प्रधान शिक्षण विधि को महत्व दिया गया। ''इस विधि की मुख्य विशेषताएं'' हैं–

1. बेसिक शिक्षा में क्रिया एवं अनुभवों को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। बच्चों को प्रकृति का निरीक्षण करने व सामाजिक कार्यों में भाग लेने के अवसर दिये जाते हैं और इस प्रकार उन्हें स्वयं अनुभव द्वारा सीखने के अवसर दिये जाते हैं।
2. बेसिक शिक्षा में समस्त विषयों एवं क्रियाओं को एक दूसरे से सम्बन्धित कर पढ़ाया जाता है। इसे सहसम्बन्ध विधि कहते हैं। प्रारम्भ में सह सम्बन्ध का आधार किसी हस्त कौशल अथवा उद्योग को ही रख गया था आगे चलकर प्राकृतिक पर्यावरण अथवा सामाजिक पर्यावरण को भी उसका आधार बनाये जाने की स्वीकृति दी गई। इस विधि में बच्चे वास्तविक परिस्थितियों में वास्तविक क्रियाओं में भाग लेते हुए वास्तविक ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करते हैं और उस सबको एक पूर्ण इकाई के रूप में प्राप्त करते हैं।
3. बेसिक शिक्षा में बच्चों को जीवन की वास्तविक क्रियाओं के माध्यम से वास्तविक ज्ञान कराया जाता है।
4. बेसिक शिक्षा में मातृभाषा का ज्ञान भी स्वाभाविक रूप से कराया जाता है। पहले मौखिक भाषा सिखायी जाती है और उसके बाद लिखित भाषा सिखायी जाती है।
5. बेसिक शिक्षा में बच्चों को आत्माभिव्यक्ति के स्वतंत्र अवसर प्रदान किये जाते हैं।

बेसिक शिक्षा में शिक्षक

बेसिक शिक्षा में प्राथमिक स्तर पर पुरुष शिक्षकों के स्थान पर महिला शिक्षिकाओं को वरीयता दी जाये। साथ ही इस बात पर बल दिया कि प्राथमिक शिक्षक कम से कम मैट्रिक पास हो और शिक्षण प्रशिक्षण प्राप्त हो।

''गाँधी जी के अनुसार शिक्षक को असमाज का आदर्श व्यक्ति होना चाहिए, सत्य आचरण करने वाला होना चाहिए, इनकी दृष्टि से किसी भी व्यक्ति को यह कार्य केवल व्यवसाय के रूप में नहीं अपनाना चाहिए अपितु उसके पीछे समाज सेवा का भाव होना चाहिए।'' ऐसे ही व्यक्ति बच्चों का सही मार्गदर्शन कर सकते हैं। जहाँ तक शिक्षकों से आदर्श आचरण की अपेक्षा की बात है, प्रायः सभी समाज यह अपेक्षा करते हैं। पर आज के युग में शिक्षकों से यह अपेक्षा करना कि वे उच्च वेतन की मांग न करें और इस कार्य को सेवा भाव से करें, केवल सैद्धान्तिक बात है। यदि शिक्षक अपना कार्य ईमानदारी से करे तो वही पर्याप्त होगा।

बेसिक शिक्षा के गुण

सच बात तो यह है कि सिद्धान्त रूप में तो यह योजना बड़ी उपयोगी नजर आती है परन्तु प्रयोग रूप में अनुपयुक्त रही है। इसके सिद्धान्तों को ही हम गुण मान सकते हैं।

1. आत्मनिर्भर योजना– उस समय सरकार के पास अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए पर्याप्त धन नहीं था। बेसिक शिक्षा को हस्तकौशलों पर आधारित करके उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विक्रय से

स्कूलों का व्यय निकालने का विचार बड़ा उपयोगी लगता था। ऐसा हो नहीं पाया यह दूसरी बात है।

2. मनुष्य के सर्वांगीण विकास पर बल– बेसिक शिक्षा में मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं चारित्रिक, व्यावसायिक और आध्यात्मिक विकास पर बल दिया गया है यह दूसरी बात है कि हम इसके द्वारा इन सब उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सके।

3. वास्तविक जीवन की तैयारी है– हमारा देश गाँवों का देश है। बेसिक शिक्षा में बच्चों को ग्रामीण उद्योग– कृषि एवं पशुपालन आदि और ग्रामीण हस्तकौशलों– कताई एवं बुनाई आदि की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाने की व्यवस्था की गई थी और यह आशा की गई थी कि इसे प्राप्त करने के बाद वे अपनी जीविका कमा सकेंगे। सिद्धान्ततः यह बात बहुत अच्छी है। यह बात दूसरी है कि हम बेसिक शिक्षा द्वारा ऐसा नहीं कर सके।

4. भारतीयों के लिए आधारभूत पाठ्यचर्या– बेसिक शिक्षा भारतीयों के वास्तविक जीवन से सम्बन्धित है। इसमें मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए समस्त आवश्यक विषयों सामाजिक क्रियाओं को स्थान दिया गया है और सबसे बड़ी बात है कि इसमें हिन्दी को पूरे देश के बच्चों के लिए आवश्यक किया गया है। काश हम ऐसा कर सके होते तो पूरा देश एक सूत्र में बंध गया होता।

5. वर्गभेद की समाप्ति– हमारे देश में जाति, धर्म और श्रम आदि अनेक आधारों पर अनेक प्रकार के वर्ग हैं। बेसिक शिक्षा में सबके लिए समान शिक्षा और सबके लिए समाज सेवा कार्य की व्यवस्था की गई है। इस सबसे वर्ग भेद यदि समाप्त नहीं तो कम तो किया ही जा सकता है।

बेसिक शिक्षा के दोष

सैद्धान्तिक दृष्टि से बेसिक शिक्षा के चाहे जितने गुण गिनाये जायें व चाहे जितनी उसकी प्रशंसा की जाये पर व्यवहारिक रूप में यह एकदम असफल रही है। इसके निम्नलिखित दोष हो–

1. अपूर्ण योजना– वैसे तो इसे राष्ट्रीय शिक्षा योजना कहा जाता है परन्तु वास्तव में यह केवल अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की योजना ही है। फिर इसमें केवल ग्रामीण बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखा गया है, नगरीय बच्चों की आवश्यकताओं का नहीं।

2. उच्च शिक्षा से सम्बन्ध का अभाव– बेसिक शिक्षा 7 से 14 आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा है। इसकी पाठ्यचर्या केवल इसी वर्ग के बच्चों की वह भी ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनायी गई है। इसका निमार्ण करते समय उसका माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या से सम्बन्ध नहीं जोड़ा गया, उसे उच्च शिक्षा का सही आधार नहीं बनाया गया। ऐसा लगता है कि उसके बाद बच्चे पढेंगे ही नहीं। शिक्षा तो क्रमबद्ध रूप से चलनी चाहिए।

3. नगरीय क्षेत्रों के लिए अनुपयुक्त– यह माना कि भारत ग्रामों का देश है, परन्तु प्राथमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या को केवल ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित करना उपयुक्त नहीं है। नगरीय बच्चों के जीवन से इसका कोई सम्बन्ध न होना इसका एक बड़ा दोष है। ऐसा लगता है कि बेसिक शिक्षा केवल भारत के निर्धन जनता के लिए ही बनाई गई है।

4. समय एवं शक्ति का अपव्यय – प्राथमिक स्तर पर बच्चों को हस्त–कौशलों में दक्षता प्रदान करना संभव नहीं बेसिक शिक्षा में न तो बच्चे को किसी हस्त–कौशल में दक्ष किया जा सका और न उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं से स्कूलों का व्यय निकाला जा सका। इसमें कच्चे माल की बरबादी के साथ–साथ बच्चों के समय एवं शक्ति का भी अपव्यय होता है।

निष्कर्ष

गाँधी जी ने स्पष्ट किया कि मातृ–भाषा पर बच्चों का स्वाभाविक अधिकार होता है, उसी के माध्यम से जनशिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है। यही कारण है कि बेसिक शिक्षा से अभिव्यक्ति के आधारभूत माध्यम मातृ–भाषा को शिक्षा का

माध्यम बनाना सिद्धान्तः स्वीकार किया गया। गांधीजी के द्वारा दिये गये आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक, नागरिकता का उद्देश्य साथ ही साथ सर्वोदय समाज की स्थापना जिसके अंतर्गत श्रम का महत्व होगा, धन का नहीं, स्नेह और सहयोग की भावनाएं होंगी, घृणा एवं पृथकता नहीं, शोषण के स्थान पर परहित एवं संचय की प्रवृत्ति के स्थान पर त्याग की प्रवृत्ति होगी। वर्तमान में शोषण, घृणा, स्वार्थ सिद्धि जैसे कुधारणा के कारण मारकाट, विनाश तथा मानवता का हनन हो रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि गांधीजी की सर्वोदय समाज की स्थापना का उद्देश्य आज आवश्यक बन गया है। गांधीजी ने धर्म की शिक्षा का भी बहिष्कार किया। क्योंकि उन्हें भय था कि जिन धर्मों की शिक्षा दी जाती है अथवा पालन किया जाता है वे मेल के स्थान पर झगड़े उत्पन्न करते हैं। वर्तमान स्थिति भी इस बात की समर्थक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लाल बसन्त, समकालीन पाश्चात्य दर्शन, प्रकाशक, नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल जैन बनारसीदास, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2014
2. गुप्ता, एम0एल0, समाजशास्त्र,प्रकाशक, साहित्य भवन पब्लिकेशनस, आगरा, 2005
3. या. मसीह पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास, प्रकाशक, नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, जैन, दिल्ली पंचम संस्करण 2003
4. विजय, चन्द्र महात्मा गांधी का धर्म दर्शन, प्रकाशक, जानकी प्रकाशन, पटना, बिहार, 1985
5. वर्मा वेद प्रकाश, नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत, प्रकाशक, अलाइड पब्लिशिंग लि. नई दिल्ली, 2012
6. श्री श्रीमद् ए0सी0भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप, प्रकाशक, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट, मुबई, 2015
7. राधाकृष्ण सर्वपल्ली, आधुनिक युग में धर्म, प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 दिल्ली, 2011
8. मणि स्यमन्तक मिश्र, धर्म क्षेत्र कर्म क्षेत्र (श्रीमद्भगवद्गीता), प्रकाशक, प्रबोध शिक्षा समिति, गोरखपुर, 2010
9. नारायण हृदय मिश्र, पाश्चात्य दर्शन की समस्याऍं ज्ञान मीमांसा एवं तत्व मीमांसा (द्वितीय संस्करण, 2014)